

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
के साहित्य विद्यापीठ के अंतर्गत हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग में
एम.फिल.उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-सारांश

'मानुषखोर में संस्कृति और सत्ता का सत्ता का स्वरूप'
'Maanushkhor Me Sanskriti Aur Satta Ka Swarup'

प्रस्तुतकर्ता

आशीष

एम. फिल. सत्र 2014-15

पंजीयन क्रं. 2014/02/215/06

हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग



ज्ञान शांति मैत्री

ज्ञान शांति मैत्री

ज्ञान शांति मैत्री

साहित्य विद्यापीठ

हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

गांधी हिल्स, वर्धा- 442001(महाराष्ट्र) भारत

शोध सारांश

प्रस्तुत लघु शोध प्रबंध जिसका शीर्षक 'मानुषखोर में संस्कृति और सत्ता का स्वरूप' है। यह तीन अध्यायों में विभक्त है जिसका पहला अध्याय संस्कृति और सत्ता का स्वरूप है। इस अध्याय में तीन उप-अध्याय हैं। पहला उप-अध्याय 'संस्कृति: अर्थ अर्थ एवं परिभाषा' है। इसके अंतर्गत बताया गया है कि संस्कृति मानव जीवन का प्रमुख अंग है संस्कृति जीवन की विधि है। यह उस विधि का प्रतीक है जिसमें हम सोचते हैं और कार्य करते हैं। इसमें वे चीजें भी सम्मिलित हैं जो हमने समाज के सदस्य के नाते उत्तराधिकार के रूप में प्राप्त की हैं। संस्कृति का अर्थ बताते हुए विभिन्न शब्दकोशों के माध्यम से संस्कृति को परिभाषित किया गया है। जैसे वृहद हिन्दी शब्दकोश के अनुसार संस्कृति का शाब्दिक अर्थ परिष्कार, पूर्णता, तैयारी, शुद्धि, सुधारना, सफाई आदि बताया गया है। संस्कृति और संस्कार का संबंध भी स्पष्ट करते हुए बताया गया है कि संस्कृति साध्य है तो संस्कार साधन। संस्कृति में जीवन के पूर्णत्व का संकेत है तो संस्कार विधिविधानों की ओर इंगित करता है। संस्कार संस्कृति के मूल में विद्यमान रहते हैं। अतः इस उप-अध्याय में संस्कृति के अर्थ एवं परिभाषा के बारे में बताया गया है। दूसरा उप-अध्याय 'भारतीय संस्कृति का स्वरूप' है। इसमें भारतीय संस्कृति के विभिन्न रूपों के बारे में बताया गया है। निरंतरता, एकता, समन्वय, धर्म-अध्यात्म आदि ऐसे गुण हैं जो भारतीय संस्कृति को अन्य संस्कृति से अलग करते हैं। भारतीय संस्कृति की विशेषताओं को भी संक्षिप्त रूप में बताया गया है। तीसरा उप-अध्याय सत्ता का स्वरूप है। इसके अंतर्गत सत्ता के उन तमाम पहलुओं के बारे में बताया गया है जिनसे कि मनुष्य प्रभावित और प्रताड़ित होता है। साथ ही साथ यह बताया गया है कि सत्ता के विभिन्न अलग-अलग रूप हैं। सत्ता समाज में रहते हुए ही क्रियाशील होती है और समाज के द्वारा ही यह निरंतर आगे बढ़ती है और अपना विकास करती है। समय बीतने के साथ-साथ सत्ता का यह रूप बदलने लगा। सत्ताधारियों ने समाज की जगह उच्च कुलीन वर्ग को स्थान देना आरंभ कर दिया। पूँजीपतियों और कुलीन वर्ग की खातिर सत्ताधारियों ने अपना लक्ष्य समाज से हटाकर अब उनकी ओर केन्द्रित कर लिया है

। इस कारण सत्ता का हस्तक्षेप अब प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ चुका है। सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, शिक्षा आदि के क्षेत्र में हस्तक्षेप से समाज की स्थिति अब दयनीय हो गयी है। जन की जगह धन और जनतंत्र की जगह धनतंत्र ने ले लिया है। अतः इस उप-अध्याय के माध्यम से यही दिखाने का पूरा प्रयास रहा है कि सत्ता का जो संबंध है समाज और व्यक्ति से अब वो टूट रहा है। सत्ता के कारण मनुष्य का जीवन निरंतर अस्त-व्यस्त हो रहा है।

द्वितीय अध्याय 'मानुषखोर में संस्कृति का स्वरूप' है। इस अध्याय के अंतर्गत दो उप-अध्याय हैं। पहला है 'समासिक संस्कृति' इसमें मानुषखोर के अंतर्गत दो संस्कृतियों के योग को बताया गया है। राजवंशी गजा गाँव में आते हैं वे यहाँ आकर अपनी संस्कृति का पालन करते हैं साथ ही साथ वे भारतीय संस्कृति को भी अपनाते हैं। राजवंशी ही नहीं विदेशी भी जब गजा गाँव आते हैं तो वे भी भारतीय संस्कृति को अपनाते हैं। विदेशी पूरी कोशिश करते हैं कि वे वहाँ की स्थानीय भाषा गढ़वाली में ही बातचीत करें। वे भारतीय संस्कृति के अधिकतर गुणों को अपनाने की कोशिश करते हैं। इस लघु शोध प्रबंध के माध्यम से यह भी दिखाने का प्रयास रहा है कि किस तरह भारतीय संस्कृति में अनेक संस्कृति का मिलन होता है। अमेरिकन संस्कृति और भारतीय संस्कृति का योग भी इस उप-अध्याय के माध्यम से दिखाने का प्रयास किया गया है। अतः इस उप-अध्याय के माध्यम से मानुषखोर के अंतर्गत समासिक संस्कृति के स्वरूप को उभारने का प्रयास किया गया है। दूसरा उप-अध्याय 'वर्चस्व की संस्कृति' है। इसमें उपन्यास के माध्यम से वर्चस्व की संस्कृति को उभारने का प्रयास रहा है और बताया गया है कि समाज का एक वर्ग दूसरे वर्गों पर राजनीतिक एवं वैचारिक तरीकों से अपना प्रभुत्व स्थापित करता है। किसी वर्ग द्वारा दूसरे वर्गों पर नियंत्रण करने के लिए उत्पीड़न अर्थात् बल आवश्यक होता है। समाज का प्रभुत्वकारी वर्ग अपने वर्चस्व की स्थापना के लिए अधीनस्थ वर्गों से उनकी सहमति प्राप्त करता है। सहमति की प्राप्ति के लिए प्रभुत्वकारी वर्ग अनेक तरीकों से अधीनस्थ वर्गों पर अपनी नज़र से संसार देखने के लिए लोगों को तैयार करता है। प्रभुत्वकारी वर्ग का अधीनस्थ वर्ग की सोच, विचारधारा, मूल्य, संस्कृति पर वर्चस्व स्थापित करना होता है। यह वर्चस्व की संस्कृति सदियों से चली आ रही है, जहाँ पहले राजा थे अब नेता हैं। नेता

यह कार्य किसी भी कीमत पर करना चाहते हैं और फिर करते भी हैं उन्हें कोई रोक भी तो नहीं सकता। वर्चस्व की संस्कृति को मानुषखोर उपन्यास के माध्यम से भी बताया है जिसमें कथा के नायक मुखिया जी आरंभ से लेकर अंत तक मुखिया जी के ही रूप में रहते हैं। गज़ा गाँव में तो उनका व्यापक रूप से वर्चस्व कायम था कोई भी व्यक्ति न उनके विरुद्ध खड़ा हो सकता था और न ही कोई उनका अपमान कर सकता था और न ही उनको चुनौती दे सकता था। वे पूरे इलाके में हमेशा चर्चा का विषय भी बने रहते थे। मुखिया जी अपना वर्चस्व पूरे गाँव में स्थापित कर चुके थे जिसमें कि गाँव वालों की भी सहमति थी। वे गाँव के मुखिया कब बने इसका किसी को पता भी नहीं था, इससे पता चलता है कि उनका वर्चस्व कितना प्रभावशाली था। मुखिया जी जब दिल्ली आते हैं वहाँ भी उनका वर्चस्व स्वतः ही फैलने लगता है। मास्टर जी जिनके यहाँ वे ठहरते हैं, उनके आस-पड़ोस के लोग स्वयं आकर मुखिया जी को पूजने लगते हैं। मुखिया जी ने अपना प्रचार-प्रसार नहीं किया, अपितु लोगों की अपनी सहमति के ही कारण वे अपना वर्चस्व कायम कर सके और मुखिया जी दिल्ली आकर फिर से मुखिया बन गए। इस उप-अध्याय के माध्यम से यही लक्ष्य रहा है समाज में व्यक्ति वर्चस्व को पाने और उसको आगे बढ़ाने के लिए निरंतर जद्दोज़हद करता है।

तृतीय अध्याय मानुषखोर में 'सत्ता का स्वरूप है' इसके अंतर्गत तीन उप-अध्याय हैं। पहला उप-अध्याय 'विस्तार की महत्वकांक्षा' है इसमें मानुषखोर उपन्यास के माध्यम से यह बताने का प्रयास किया गया है कि प्रत्येक व्यक्ति या समूह में अपने लिए कुछ न कुछ महत्वकांक्षा होती है। वह समय आने पर इतना स्वार्थी हो जाता है कि बस अपने लिए ही सोचता है। यदि किसी व्यक्ति का या समाज का कोई नुकसान हो रहा हो तो वह इस ओर ध्यान नहीं देता। मानुषखोर उपन्यास में राजवंशी, नेपाली राजा ये सब गज़ा, डांडा, घंडीयाल, टिंग्री गाँव में अपने साम्राज्य का विस्तार करना चाहते हैं और इस कारण पूरे गाँव में नरसंहार भी करवा दिया जाता है। महिलाओं का मानसिक एवं शारीरिक शोषण किया जाता है, राजा उन्हें अपने यहाँ भोग-विलास के लिए रख लेते हैं पुरुषों को मार दिया जाता है, और जो पुरुष बच जाते हैं उन्हें अपने यहाँ बंदी बनाकर बेगारी करवाया जाता है सिर्फ और सिर्फ इसलिए कि कोई उनके विस्तार की

महत्वाकांक्षा में अवरोध उत्पन्न न करे और वे आसानी से निरंतर आगे बढ़ते रहे। इस उप-अध्याय में मानुषखोर के माध्यम से वर्तमान समाज को भी इंगित किया है जिसमें सत्ताधारी वर्ग अपने अपने महत्वाकांक्षा की खातिर समाज को नुकसान पहुंचाते हैं और जरूरत आने पर जब लोग इनका विरोध करते हैं उनकी हत्या ये लोगों की हत्या करने से भी नहीं चूकते। दूसरा उप-अध्याय वर्चस्व का संघर्ष है। इस उप-अध्याय के अंतर्गत यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि व्यक्ति अपने वर्चस्व को कायम करने के लिए कितना संघर्ष करता है। उपन्यास के माध्यम से यह भी दिखाने का प्रयास किया गया है कि राजनीति में व्यक्ति अपने वर्चस्व को निरंतर कायम रखना चाहता है और इसके लिए वह कुछ भी कर बैठा है। राजनीतिक स्वार्थ के कारण व्यक्ति अपने प्रतिद्वंदी की हत्या तक करवा देता है मोतीराम की हत्या इसी प्रकार होती है। मोतीराम राजनीतिक षड्यंत्र के कारण मारा जाता है। यह स्थिति हमें वर्तमान समय में भी देखने को मिल जाता है।

तीसरा उप-अध्याय मूल्यविहीन राजनीति है जिसमें मानुषखोर उपन्यास के माध्यम से यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि सत्ता समाज को बांटने का प्रयास करती है जिसमें की व्यक्ति स्वार्थी होकर सिर्फ अपने लिए ही सुगम मार्ग की खोज करता है। सत्ता आदमी को बांटने और उसे तोड़ने का कार्य करती है जिससे कि आम का आदमी अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है। उपन्यास में लेखक ने राजनीतिक वर्चस्व को मानुषखोर ठहराया है गाँव में राजनीति के वर्चस्व के कारण सारे मूल्यों को दांव पर लगाकर ग्रामीण लोगों का शोषण होता है इसके अलावा न वहाँ पर विकास का कार्य होता है और न ही वहाँ के लोगों को कोई बुनियादी सुविधाएं मिल पाती है। पहाड़ धसकनें जैसी आपदाओं के कारण जीवन अस्त-व्यस्त भी हो जाता है और यदि कभी भारी बारिश हो जाए तो बाहर निकलना भी मुश्किल हो जाता है। गाँव में एक भी अस्पताल नहीं है जिससे कि ग्रामीण लोगों को आपातकाल में उचित चिकित्सा मिल सके। राजनीति में से जो व्यक्ति वहाँ पर आता है वह सिर्फ लोगों का शोषण ही करता है और स्वार्थी होकर केवल अपना ही पेट भरता है। केवल गज़ा ही नहीं दिल्ली शहर में भी नेता लोग अपने स्वार्थ के कारण सांप्रदायिक दंगे करवाते हैं। विकास का अंश मात्र भी वहाँ दिखाई नहीं देता। सत्ता के लालच में एक दूसरे

के प्रति अभद्र व्यवहार, स्त्री को प्रताड़ित करना, असमानता आदि अनेक प्रकार के रूप हमें देखने को मिलते हैं। राजनीति के नीति-निर्धारक मूल्यों के तत्वों का सबसे ज्यादा हनन हमें शहर में ही देखने को मिलता है। राजनीति को मूल्यविहीन बनाकर सत्ता पर स्थापित व्यक्ति स्वार्थी बनकर अपना, अपनी जाति, कुल वंश के लोगों का ही भला करते हैं। समाज कल्याण की भावना से, समाज में विकास से, उनका दूर-दूर तक कोई रिश्ता नहीं है। उपन्यास के अंतर्गत मोतीराम की हत्या मूल्यविहीन राजनीति को दर्शाता है जो कि आज के समाज का छाया है।

अतः कहा सकता है कि इस लघु शोध प्रबंध के माध्यम से समाज में सत्ता और समाज के स्वरूप को उजागर करने का प्रयास किया गया है। मानुषखोर उपन्यास के माध्यम से राजनीति, वर्चस्व, विस्तार की महत्वाकांक्षा को दिखाया गया है और यह दिखाने का प्रयास किया गया है कि मनुष्य का पर इसका कितना प्रभाव पड़ रहा है। सत्ता जहाँ हमें विनाश की ओर ले जाते हैं वहीं संस्कृति हमारे नैतिक मूल्यों का निर्माण करती है ताकि मानव जीवन का कल्याण हो सके।

Presented dissertations titled "The nature of Culture and the Power in Manuskhor. It is divided into three chapters; the first chapter is the nature of culture and power. This chapter has three sub-chapters. The first sub-chapter is the meaning and definition of Culture. It also noted that culture is important part of human life. It signifies that the method in which we think and act. It includes the things we inherit as a member of society as received. Meaning of culture is defined by various dictionaries. According to the literal meaning of culture, by *Vrihad-Hindi dictionary* is sophistication, perfection, preparation, purification, repair, cleaning, etc. The relationship of Culture and the sacraments is clearly stated that culture is practicable

and sacrament is the way of life. In the culture of life is a sign of unity of the rite rituals indicates. Therefore, this sub-chapter of the meaning and definition of culture is mentioned. The second sub-chapter is 'The nature of Indian culture'. It has been reported about the various forms of Indian culture. Continuity, unity, co-ordination, religion-spirituality etc. It is indicate that our Indian culture is different from other cultures. A characteristic of Indian culture is also briefly mentioned. The third sub-chapter is 'the format of Power'. Under this authority has told them about all aspects which affect humans and is tortured. As well as it has been reported that various different forms of power. There is power in society while still active and sustained by society as it moves and has its own development. This form of power, along with the passage of time began to change. The powers of the society started to place higher elite location. Capitalists and rulers for the sake of the elite society diverted from his goal now is to have them focus. The cause of the interference power has now increased in each region. Social, economic, cultural, educational and social conditions in the areas of intervention have now been pathetic. Place the wealth of people and democracy have taken place Dntnr. Therefore, this sub-chapter through the effort of Dikhanen that the relations of power in society and the person he is now being broken. The power of human life is constantly disrupted.

Chapter 2nd is 'the nature of the culture in Manuskhor '. The chapter comprises two sub-chapters. The first is 'Smasik culture' under the Manuskhor told the sum of the two cultures. Gaza village come in dynastic culture they come here and follow Indian culture as well as take. Not only when foreign dynastic Gaza villages, they

also take a number of Indian culture. Foreign endeavour that they talk in the vernacular Garhwali. Indian culture is to try to adopt the most properties. Through this short dissertation is also to show how the culture of many cultures meet. Chances of American culture and Indian culture, this sub-chapter has attempted to show through. Therefore, under this sub-chapter through Manuskhori Smasik culture has attempted to enhance the appearance. The second sub-chapter 'culture of domination is'. Through this novel effort to enhance the culture of domination and have been told that a section of society on the other sections are dominated by political and ideological ways. A class to control other sections namely Utpeedhnn force is necessary. To establish their domination of the dominant class of society subordinate classes receive their consent. The dominant class in various ways to achieve consensus on the subordinate classes from your eye to see the world prepares for the logo. The subordinate class thinking dominant class, ideology, values, culture is to establish supremacy over. It has been for centuries the culture of domination, which was the first king leader now. This is the leader at any cost want to do and then they also can not even stop there. Manuskhori culture of domination through the novel is also the chief protagonist of the story, from beginning to end live only remain as head of G. Gaza village, he was widely dominated nobody could stand against them and no one could insult them nor would challenge them. They are in the area and were always remain a subject of discussion. Chief Minister had made their dominance in the village where the villagers had agreed to. When he became head of the village was not even aware that someone, it shows how influential he

was dominated. Delhi Chief Minister are also automatically begins to spread their domination. Master Gee whose name they are here, their neighborhood themselves seem to come and worship G chief. Chief Minister did not own publicity, but because of the people agreed they could dominate and Chief Minister of Delhi became head size again. This sub-chapter through the target person in the society and get domination continued to pursue him is Jddojhhd.

The third chapter in Manuskhori 'nature of power' under the three sub-chapters. The first sub-chapter 'expansion ambitions' novel through the Manuskhori has tried to tell her something for each person or group has ambitions. He is so selfish that when the time comes for just thinks. Any loss of a person or society if he does not care. Manuskhori dynastic novel, Nepali king all Gaza, blackjack, Gndiyal, Tingri village would like to expand his empire and therefore generate a massacre in the village is given. Mental and physical abuse of women is, King manages to keep them here for luxury indulgence-is killed men, and men are to escape their forced labor is provided here as a prisoner and only because someone does not create barriers to their expansion ambitions and they are constantly moving. In this sub-chapter through Manuskhori current society in which the ruling class is also indicated for the sake of their ambitions damage to society and the people on the need to resist them by killing their murder these people not also missing. The second sub-chapter is a struggle for supremacy. Under this sub-chapter has attempted to show that person how fights to maintain its domination. Through novel has also attempted Dikhanen politics continued to maintain its domination in the individual wants and anything he

sits. The person to kill his rival for political Motiram killing is done is similar. Motiram is killed because of political conspiracy. The situation we are witnessing at the present time.

The third sub-chapter novel Manuskhori through animal spirit in which politics has attempted to show that the regime is trying to divide the society in which the individual is selfish and just as easy to route searches. The man is sharing power and it works by breaking so that the common man is being jeopardized. The novel is set in the author Manuskhori political supremacy in the village due to the domination of politics by all the values at stake are the exploitation of rural development is also not there, nor there is no infrastructure to get people finds. Dsknen caused disasters such as mountain life gets too chaotic and sometimes heavy rain when it becomes too difficult to get out. Not a single hospital in the village so that rural people can get proper medical care in emergency. In politics, the person who comes to see only exploitation of people and their own selfish and only fills the stomach. Gaza not only the leader of the city of Delhi in their self-interest, thereby allowing the communal riots. Even a fraction of a development does not appear there. Indecent behavior towards one another in a lust for power, persecuting woman, inequality etc. When we meet as many types. Most of the elements of political policy-making values abuses we have seen in the city. The animal spirit power politics by establishing individual selfish as his, your race, the descendants of the people are good. The spirit of social welfare, community development, the far is not a

relationship. Under Motiram killing novel animal spirit which reflects that politics is the shadow of today's society.

So said that the dissertations in society through the power and the nature of society has attempted to highlight. Manuskhori through novel politics, hegemony, expansion and the ambition shown that it has attempted to show how much impact it has on humans. Where is the power to move us toward the destruction of the culture of our moral values can be constructed so that the welfare of human life.